✺ 4 मई 2014 (28-6-77) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] एक भी सब्जेक्ट में कमी है तो फुल पास नहीं लेकिन पास होंगे। एक है पास विथ ऑनर और दूसरी स्टेज है पास होना। जो सिर्फ पास होते है पास विथ ऑनर नहीं तो उन्हों को पास विथ ऑनर के अन्तर में धर्मराज की सजाओं से पास होना पड़ता है अर्थात् थोड़ा बहुत भी सजाओं का अनुभव पास करेंगे। पास विथ ऑनर औरों को पास करते हुए देखेंगे इसलिए हर सब्जेक्ट में फुल पास होना है– तो हर खजाने की बचत करो और बजट बनाओ अर्थात् वेस्ट मत करो।

2] दूसरी बात वेट कम करो। एक तो पिछले जन्मों का रहा हुआ हिसाब-किताब का बोझ समाप्त करने में लगे हो, लेकिन वह बोझ कोई बड़ी बात नहीं है, ब्राह्मण बनकर वा ब्रह्माकुमार/ब्रह्माकुमारी कहलाकर विश्व कल्याणकारी वा विश्व सेवाधारी कहलाकर फिर भी अगर ऐसा कोई विकल्प वा विकर्म करते हैं तो वह बोझ उस बोझ से सौगुणा है।

3] सागर के अन्दर रहने वाले जीव-जन्तु सागर में समाए हुए होते, बाहर नहीं निकलना चाहते। मछली भी पानी के अन्दर रहती, बाहर आई तो खत्म। सागर व पानी ही उसका संसार है, इतना बड़ा बाहर संसार उसके लिए कुछ भी नहीं, ऐसे ज्ञान सागर बाप में समाए हुए, इन्हों का संसार भी बाप अर्थात् सागर होता है। ऐसे अनुभव करते हो वा बाहर चक्र लगाने की दिल होती है?

4] अगर बाहर की आकर्षण के वशीभूत होने का अभ्यास होगा तो समय पर धोखा दे देगा। सरकमस्टॉन्स ऐसे आयेंगे जो इस अभ्यास के सिवए और कोई आधार ही नहीं दिखाई देगा। एकान्तवासी अर्थात् अनुभवी मूर्त।

✺ योग-

1] --------

✺ धारणा-

1] चारों ओर यह अटेन्शन दिलाते हैं कोई भी चीज़ वेस्ट मत करो और दूसरी बात वेट कम करो। वह लोग तो शरीर का वेट कम करने के लिए कहते हैं, लेकिन बापदादा आत्मा के ऊपर जो बोझ है, जिस बोझ के कारण ऊंची स्टेज का अनुभव नहीं कर पाती तो वेट को कम करो। एक वेस्ट मत करो और दूसरा वेट कम करो। इन दो बातों के ऊपर विशेष अटेंशन चाहिए। अपनी शक्तियां वा समय वेस्ट करने से जमा नहीं होती और जमा न होने कारण जो खुशी वा शक्तिशाली स्टेज का अनुभव होना चाहिए, वह चाहते हुए भी नहीं करत सकते।

2] सदैव यह ध्यान पर रखना है कि ज्ञानी तू आत्मा हकलाते अथवा सर्विसएबुल कहलाते ऐसा कोई कर्म वा वातावरण फैलाने के वायब्रेशन उत्पन्न होने के निमित्त न बते जिससे सर्विस के बजाए डिस-सर्विस हो क्योंकि सर्विस भी हो लेकिन एक बार की डिस-सर्विस दर बार की सर्विस को समाप्त कर देती है।

3] अब क्या करना है? वेस्ट मत करो और वेट कम करो। धर्मराज पुरी में जाने के पहले अपना धर्मराज बनो। अपना पूरा चोपडा खोलो और चेक रो पाप और पुण्य का खाता क्या रहा हुआ है, क्या जमा करना है; और विशेष स्वयं प्रति प्लैन बनाओ। पाप के खाते को भस्म करो। पुण्य के खाते को बढ़ाओ।

✺ सेवा-

1] डायरेक्शन मिले कि इन आत्माओं की वृत्ति वा दृष्टि वा श्रेष्ठ अनुभवों के प्रभाव से सेवा करो तो कर सकते हो वा सिर्फ वाणी द्वारा कर सकते हो? जैसे वाणी द्वारा आत्माओं को बाप से सम्बन्ध जुटाने के नम्बरवार निमित्त बनते हो वैसे अपनी सूक्ष्म स्थिति के वा मास्टर सर्वशक्तिमान् वा मास्टर ज्ञान सूर्य की स्थिति द्वारा, आत्माओं को स्वयं के स्थिति वा बाप के सम्बन्ध का अनुभव पॉवरफुल वातावरण, वायब्रेशन वा स्वयं के शक्ति स्वरूप के सम्पर्क से उन्हें भी करा सकते हो? क्योंकि जैसे समय समीप आ रहा है।

2] हर सेकेण्ड, संकल्प या स्वयं के प्रति शक्तिशाली बनाने अर्थ वा सर्व आत्माओं की सेवा अर्थ कार्य में लगाओ।

3] एकान्तवासी अर्थात् अनुभवी मूर्त। दिल्ली वाले सेवा के आदि के निमित्त बने हैं तो इस विशेषता में भी निमित्त बनो। तो इस स्थिति के अनुभव को दूसरे भी कॉपी करेंगे। यह सबसे बड़े ते बड़ी सेवा है। संगठित रूप में और इन्डीविज्युअल रूप में दोनों ही रूप से ऐसे अभ्यास का वातावरण फैलाओ।